संवाद पत्र
पूर्वोत्तर सीमा रेल
निर्माण संगठन

अंक 16 वर्ष : चतुर्थ त्रैमासिक अक्टूबर, 2010

माननीया रेल मंत्री, सुश्री ममता बनर्जी द्वारा मालदा-ओल्ड मालदा ट्रैक दोहरीकरण का उद्घाटन

सुश्री ममता बनर्जी, माननीया रेल मंत्री ने दिनांक 13.9.2010 को मालदा टाउन में आयोजित एक समारोह में श्री मुकुल राय, माननीय जहाजरानी राज्य मंत्री, श्री ए.एच.के. चौधरी, माननीय सांसद, श्रीमती मौसम नूर, माननीया सांसद, श्रीमती सावित्री मित्रा, माननीया विधायक, श्री कृष्णेंदु नारायण चौधुरी, माननीय विधायक, श्री वी.एन.त्रिपाठी, महाप्रबंधक/पूर्व रेलवे तथा श्री केशव चन्द्रा, महाप्रबंधक/पूर्वोत्तर सीमा रेल की उपस्थिति में महानंदा नदी पर बने नव निर्मित पुल सहित 1.2 किमी मालदा-ओल्ड मालदा पैच दोहरीकरण को राष्ट्र को समर्पित किया तथा एक ट्रेन को झंडी दिखाकर रवाना किया। वर्ष 2007-08 में स्वीकृत यह पैच दोहरीकरण परियोजना कुल 20.71 करोड़ रूपए की लागत से जून, 2010 में पूरी की गई। उसी दिन न्यू जलपाईगुड़ी आउटडोर रेलवे स्टेडियम में आयोजित एक समारोह में सुश्री ममता बनर्जी, माननीया रेल मंत्री ने श्री मुकुल राय, माननीय जहाजरानी राज्य मंत्री, श्री महेंद्र कुमार राय, सांसद, श्री देव प्रसाद राय, माननीय विधायक, श्री खगेश्वर राय, माननीय विधायक तथा अन्य गण्यमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में नार्थ बंगाल के विकास के लिए विभिन्न रेल परियोजनाओं का शिलान्यास तथा उद्घाटन किया एवं कई गाड़ियों को झंडी दिखाकर रवाना किया।

इसके अतिरिक्त माननीया रेल मंत्री ने निम्नलिखित कार्यों की आधारशिला रखी-

माननीया रेल मंत्री, सुश्री ममता बनर्जी अन्य गण्यमान्य व्यक्तियों के साथ हरी झंडी दिखाकर ट्रेन को रवाना करते हुए

(1) दार्जिलिंग, अलीपुरद्वार जंक्शन, मदारीहाट तथा न्यू माल में बहु-उद्देश्य परिसर (2) न्यू कूचबिहार में नई आर.पी.एस.एफ बटालियन (3) न्यू कूचबिहार में मल्टी डिसिप्लिनरी प्रशिक्षण केंद्र (4) न्यू कूचबिहार में नया 'ए' क्लास स्टेशन भवन और नए यूटीएस व पीआरएस प्रणाली और नए मानव सहित समपार फाटकों एवं 13 आदर्श स्टेशनों को राष्ट्र के नाम समर्पित किया।

माननीय खान एवं पूर्वोत्तर विकास मंत्री द्वारा महाप्रबंधक, पू.सी.रेल के साथ बैठक

श्री विजय कृष्ण हैंडिक के साथ श्री केशव चन्द्रा, महाप्रबंधक, पू.सी. रेल तथा श्री राधे श्याम, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/नि बैठक में भाग लेते हुए

दिनांक 6.9.2010 को जोरहाट में श्री विजय कृष्ण हैंडिक, माननीय खान एवं पूर्वोत्तर विकास मंत्री ने श्री केशव चन्द्रा, महाप्रबंधक, पूर्वोत्तर सीमा रेल तथा रेल के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक में बोगीबिल पुल तथा लामडिंग-सिलचर आमान परिवर्तन परियोजना आदि की प्रगति की समीक्षा की। इस बैठक के दौरान अन्य मुद्दों तथा विशेषकर जोरहाट एवं शिवसागर जिलों में यात्री सुविधाओं व ट्रेन सेवाओं में सुधार और नई ट्रेन चलाने जैसी जनता की मांगों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई। श्री रमेश चंद्र जैन, उपायुक्त/जोरहाट तथा श्री राणा गोस्वामी, माननीय स्थानीय विधायक एवं जोरहाट तथा शिवसागर जिलों के अन्य महत्वपूर्ण गण्यमान्य व्यक्तियों और प्रतिनिधियों ने बैठक में भाग लिया। महाप्रबंधक, पूर्वोत्तर सीमा रेल के अलावा श्री राधे श्याम, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण, श्री आनंद प्रकाश, मुख्य इंजीनियर/निर्माण-1, अपर मंडल रेल प्रबंधक, तिनसुकिया तथा पूर्वोत्तर सीमा रेल के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण भी बैठक में उपस्थित रहे।

संरक्षक	मुख्य संपादक	संपादक	सहयोग
श्री केशव चन्द्रा	श्री बकरीदन	श्री जगन्नाथ	श्रीमती रंजु झा
महाप्रबंधक/निर्माण	मुख्य राजभाषा अधिकारी/नि	उप महाप्रबंधक/राजभाषा/नि	राजभाषा अधिकारी/नि

श्री केशव चन्द्रा ने महाप्रबंधक/पू.सी.रेल और महाप्रबंधक/निर्माण का कार्यभार ग्रहण किया

श्री केशव चन्द्रा ने दिनांक 29.07.10 को महाप्रबंधक/पू.सी.रेल का कार्यभार ग्रहण किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने श्री शिव कुमार, महाप्रबंधक/निर्माण, पू.सी.रेल के दिनांक 31.07.10 को सेवानिवृत्त होने के बाद महाप्रबंधक/निर्माण, पू.सी.रेल का भी दिनांक 01.08.10 को अतिरिक्त कार्यभार ग्रहण किया। श्री केशव चन्द्रा ने भारतीय रेल मेकेनिकल तथा इलेक्ट्रिकल संस्था, जमालपुर से स्नातकोत्तर के पश्चात 1975 में भारतीय रेल सेवा में प्रवेश किया। वर्तमान पद ग्रहण करने से पहले वे उत्तर रेलवे पर अपर महाप्रबंधक के रूप में कार्यरत थे। वे मंडल रेल प्रबंधक, अंबाला, आरडीएसओ के कार्यकारी निदेशक तथा पूर्व मध्य रेल के अपर महाप्रबंधक के रूप में भी कार्य कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त वे तीन साल के लिए बर्लिन तथा जर्मनी में रेलवे सलाहकार रहे थे जिसके दौरान उन्होंने भारतीय रेल में कई आधुनिक तकनीकी विचारों का समावेश किया।

महामहिम राज्यपाल, अरूणाचल प्रदेश द्वारा सिलापथार में बोगीबिल परियोजना स्थल का दौरा

जनरल जे.जे. सिंह (सेवानिवृत्त), महामहिम राज्यपाल, अरूणाचल प्रदेश बोगीबिल परियोजना कार्यों के फोटोग्राफ तथा चार्ट देखते हुए

जनरल जे.जे. सिंह (सेवानिवृत्त), महामहिम राज्यपाल, अरूणाचल प्रदेश ने दिनांक 07.08.2010 को सिलापथार में बोगीबिल परियोजना स्थल का दौरा किया तथा बोगीबिल बृहत पुल परियोजना के चालू कार्यों की समीक्षा की। इस दौरे के दौरान महामहिम राज्यपाल को चालू कार्यों के फोटोग्राफ तथा चार्ट प्रदर्शित कर पुल के कार्यों की वर्तमान स्थिति की जानकारी दी गई। वे राष्ट्रीय एवं सामरिक महत्त्व की इस परियोजना की कार्य प्रगति और इसमें कार्यरत समर्पित दल की प्रतिबद्धता, उत्साह एवं परिश्रम से बहुत प्रभावित हुए। इस दौरे के दौरान महामहिम राज्यपाल के साथ श्री एस.के. बर्नवाल, उप मुख्य इंजीनियर/नि-II/सिलापथार तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित रहे।

स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन

64वाँ स्वतंत्रता दिवस समारोह पूर्वोत्तर सीमा रेल एवं निर्माण संगठन ने संयुक्त रूप से धूमधाम से मनाया।

श्री केशव चन्द्रा, महाप्रबंधक, पू.सी. रेल ध्वजारोहण करते हुए

श्री केशव चन्द्रा, महाप्रबंधक, पूर्वोत्तर सीमा रेल ने ओपन लाइन मुख्यालय के कार्यालय परिसर में ध्वजारोहण किया। उन्होंने उपस्थित सभी अधिकारियों, कर्मचारियों तथा उनके परिजनों को संबोधित करते हुए 64वें स्वतंत्रता दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर रेल सुरक्षा बल तथा स्कूलों के बच्चों की टुकड़ियों ने परेड में भाग लिया और तिरंगा को सलामी दी। महाप्रबंधक/पू.सी.रेल ने अपने संबोधन में अधिकारियों व कर्मचारियों के कार्यों और कर्त्तव्यनिष्ठा की सराहना की और ओपन लाइन तथा निर्माण संगठन की प्रगति का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि पू.सी. रेल सदा पूर्वोत्तर क्षेत्र के विकास के प्रति वचनबद्ध रहा है। क्षेत्र के विकास के लिए अच्छे रेलवे नेटवर्क का विस्तार हमारी प्राथमिकता है। पू.सी. रेल/निर्माण संगठन के लिए वर्ष 2009-10 एक उल्लेखनीय वर्ष रहा है। निर्माण संगठन पहले ही 5 परियोजनाओं को पूरा कर चुका है, जिनमें 62 किमी सेनचोवा-सिलघाट लाइन का पुनर्निर्माण, 44 किमी लम्बी धाउलखोवा-मोरानहाट नई लाइन, 44 किमी लम्बी हैबरगांव-मैराबाड़ी लाइन का पुनर्निर्माण, कामाख्या तथा डिब्रूगढ़ में नए स्टेशन भवनों का निर्माण एवं मालडिब्बा रख-रखाव शैड, इसके अलावा फकीराग्राम-धुबड़ी आमान परिवर्तन परियोजना एवं ओल्ड मालदा-मालदा टाउन दोहरीकरण परियोजनाएँ भी पूरी की गई। उन्होंने कहा कि इस बात का पूरा विश्वास है कि अन्य चल रही परियोजनाएँ भी लक्ष्य तिथि के अंदर पूरी की जाएँगी। उन्होंने निर्माण संगठन के पूरे दल को उनकी असाधारण उपलब्धियों के लिए बधाई दी। महाप्रबंधक ने कहा कि रेल कर्मियों का कल्याण हमारी एक सर्वोच्च प्राथमिकता है। हमें अपने बहुमूल्य मानव संसाधनों को ध्यान में रखते हुए कल्याणकारी योजनाओं में विस्तार करने की आवश्यकता है। कर्मचारियों को उन्नत आवासीय सुविधा देने हेतु पांडू में एक 'मॉडल कॉलोनी' का विकास किया गया है, जिसको रेलवे बोर्ड द्वारा सराहा गया है। गुवाहाटी स्टेशन के पास खेजुरबागान तथा उजानबाजार और कटिहार में भी इसी तरह की परियोजनाएँ शुरू की गई हैं। मालीगांव में रेलवे कर्मचारियों के बच्चों के लिए एक हॉस्टल तथा महिला कर्मचारियों के छोटे बच्चों की देखभाल के लिए एक शिशुसदन की शुरूआत की गई है।

अंत में उन्होंने अपने सभी सहयोगी रेलकर्मियों से संगठन के सभी लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक टीम के रूप में पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ काम करने के लिए अपनी शपथ दोहराई और एक बार पुन: सबको शुभकामनाएँ दीं।

राजभाषा सप्ताह समारोह

हिंदी सप्ताह समारोह, 2010 का शुभारंभ करते हुए श्री केशव चन्द्रा, महाप्रबंधक, पू. सी. रेल/नि

श्री केशव चन्द्रा, महाप्रबंधक/निर्माण ने दीप प्रज्ज्वलित करके हिंदी-सप्ताह समारोह का उद्घाटन किया। इस अवसर पर महाप्रबंधक/निर्माण ने स्वहस्ताक्षरित हिंदी-दिवस संदेश जारी किया, जिसे श्री बकरीदन, भंडार नियंत्रक/निर्माण व मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण ने पढ़कर सुनाया। महाप्रबंधक/निर्माण ने अपने संबोधन में भारत संघ की राजभाषा के बारे में संविधान में दिए गए प्रावधानों को दोहराते हुए अधिकारियों/कर्मचारियों को सभी सामान्य कार्यों में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिए कहा। इस समारोह के दौरान अधिकारियों के लिए राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता कराई गई जिसमें महाप्रबंधक/निर्माण ने स्वयं प्रश्न पूछकर अधिकारियों को प्रेरित व प्रोत्साहित किया। इस राजभाषा प्रश्नोत्तरी में सभी अधिकारियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इस समारोह के साथ ही निर्माण संगठन में हिंदी-सप्ताह की शुरूआत हुई जिसके तहत राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए।

राजभाषा सप्ताह के उपलक्ष्य में राजभाषा अनुभाग द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों यथा कर्मचारियों के लिए राजभाषा प्रश्नोत्तरी, हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन, हिंदी निबंध, हिंदी वाक्, हिंदी टंकण प्रतियोगिता तथा रेलकर्मियों के बच्चों के लिए कविता पाठ प्रतियोगिता के साथ ही एक कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया।

राजभाषा सप्ताह, 2010 के अवसर पर अधिकारियों के लिए आयोजित राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का एक दृश्य

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की संयुक्त बैठक का एक दृश्य

जून, 2010 को समाप्त तिमाही के लिए इस वर्ष की तीसरी बैठक का आयोजन ओपन लाइन (मुख्यालय) के साथ संयुक्त रूप से श्री केशव चन्द्रा, महाप्रबंधक, पूर्वोत्तर सीमा रेल की अध्यक्षता में दिनांक 29.09.2010 को किया गया। इस बैठक में श्री हामिद अली तथा श्री राम आनन्द ने प्रेक्षक के रूप में भाग लिया। बैठक में राजभाषा के प्रचार-प्रसार से संबंधी विभिन्न मदों पर विचार-विमर्श किया गया और वर्ष 2010-11 के वार्षिक कार्यक्रम पर विस्तृत रूप से चर्चा की गई।

सद्भावना दिवस का आयोजन

सद्भावना दिवस के उपलक्ष्य में अधिकारियों और कर्मचारियों को शपथ दिलाते हुए श्री बकरीदन, मुख्य कार्मिक अधिकारी/नि

दिनांक 20.08.2010 को पूर्व प्रधान मंत्री, स्वर्गीय राजीव गांधी की जन्मतिथि के उपलक्ष्य में महाप्रबंधक/निर्माण कार्यालय परिसर में सद्भावना दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री बकरीदन, भंडार नियंत्रक तथा मुख्य कार्मिक अधिकारी/निर्माण ने उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राष्ट्रीय अखण्डता एवं सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सद्भावना दिवस की शपथ दिलाई।

मुख्य सचिव, त्रिपुरा द्वारा लामडिंग-सिलचर-कुमारघाट आमान परिवर्तन कार्य की प्रगति की समीक्षा

मुख्य सचिव, त्रिपुरा ने दिनांक 04-08-10 को अगरतला में पूर्वोत्तर सीमा रेल के अधिकारियों (अपर महाप्रबंधक, मंडल रेल प्रबंधक, मुख्य सुरक्षा आयुक्त एवं मुख्य इंजीनियर/निर्माण/7) के साथ लामडिंग-सिलचर-कुमारघाट आमान परिवर्तन कार्यों की प्रगति की समीक्षा की। उनसे भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण/पी डब्ल्यू डी प्राधिकारियों से राष्ट्रीय राजमार्ग-44 के फीडर की दशा उन्नत करने और निर्माण कार्य हेतु बिना विलंब के शेष भूमि रेल को सुपुर्द करने का आग्रह किया गया।

राष्ट्रीय परियोजनाएं

जिरिबाम से तुपुल तक नई बी जी लाइन (98 कि.मी.) :

तुपुल-इंफाल सेक्शन में फाइनल लोकेशन सर्वे का कार्य प्रगति पर है एवं दिसंबर, 10 तक पूरा हो जाएगा। 1160.56 हेक्टेयर भूमि में से 654.462 हेक्टेयर भू-अधिग्रहण तथा 439.61 लाख क्यूबिक मीटर में से 127.82 लाख क्यूबिक मीटर भू-कार्य, 84.00 कि.मी में से 7.40 कि.मी फार्मेशन, 89 में से 20 छोटे पुलों, 8 में से 2 आर.ओ.बी./आर.यू.बी तथा 37623 मीटर में से 15 मीटर सुरंगीकरण का कार्य अब तक पूरा किया गया। आर्थिक नाकेबंदी और वर्तमान सुरक्षा परिदृश्य के कारण कार्य प्रगति पूरी तरह प्रभावित हुई है। राष्ट्रीय राजमार्ग-53 की खराब स्थिति तथा कमजोर/क्षतिग्रस्त पुलों से भी निर्माण सामग्री का आवागमन बाधित हो रहा है।

बोगीबिल के निकट ब्रह्मपुत्र नदी पर उत्तरी एवं दक्षिणी तटों पर लिंक लाइनों सहित रेल-सह-सडक पुल :

पुल के उत्तरी और दक्षिणी तटों पर तटबन्धों, मार्गदर्शी बांधों, छोटे एवं बड़े पुलों, स्टेशन निर्माण कार्य, बांधों का उत्थान एवं मजबूतीकरण का कार्य प्रगति पर है ।

अंतिम लेवल तक अर्थात आर.एल.110.52 मीटर तक दक्षिणी मार्गदर्शी बांधों का निर्माण तथा अंतिम लेवल अर्थात आर.एल.116.मी तक संरक्षण कार्य जैसे साउसैज क्रेटस्, ढाल पिचिंग एवं ग्राउटिंग सहित संयुक्त पहुँच तटबन्ध का कार्य पूरा हो गया है। वन क्षेत्र में आने वाले साऊथ डाइक के 3 कि. मी. को छोड़कर उत्तरी एवं दक्षिणी डाइकों का उत्थान एवं मजबूतीकरण कार्य पूरा कर लिया गया है।

उत्तरी तट पर चैनेज 29.0 से 28.525 कि.मी तक संयुक्त सम्मुखी तटबंध के लिए आर.एल 116 मी तक भू-कार्य पूरा किया गया जो कि स्लोप एंड ग्राउटिंग में बोल्डर पिचिंग सहित अंतिम स्तर है। संयुक्त पहुंच तटबंध का आगे का निर्माण कार्य प्रगति पर है एवं माह के दौरान 8.94 लाख क्यूबिक मीटर भू-कार्य, 8300 क्यूबिक मीटर एप्रोन क्रेट, 7000 क्यूबिक मीटर ढाल पिचिंग तथा 9000 क्यूबिक मीटर ढाल पिचिंग की ग्राउटिंग का कार्य पूरा कर लिया गया। उत्तरी गाइड बांध के निर्माण के लिए भू-कार्य, एप्रोन क्रेट तथा ढाल पिचिंग एवं ग्राउटिंग कार्य 106 मी. आर एल तक पूरा किया गया एवं आगे का कार्य प्रगति पर है। 19.01 लाख क्यूबिक मीटर भू-कार्य एवं 6.50 लाख क्यूबिक मीटर एप्रोन क्रेट एवं 94000 क्यूबिक मीटर ढाल पिचिंग तथा 98530 वर्ग मीटर पिचिंग की ग्राउटिंग का कार्य पूरा कर लिया गया।

तेतेलिया से बरनीहाट तक नई बीजी लाइन (21.50 कि.मी.) (आजरा-बरनीहाट नई लाइन का वैकल्पिक संरेखण) :

तेतेलिया से बरनीहाट तक फाइनल लोकेशन सर्वे पूरा किया गया एवं रेलवे बोर्ड द्वारा दिनांक 05-08-10 को कुल 384.04 करोड़ रूपए का विस्तृत प्राक्कलन स्वीकृत किया गया। सम्पूर्ण लम्बाई को समाहित करते हुए दो सेक्शनों में भू-कार्य एवं छोटे पुलों के लिए निविदाएं आमंत्रित की गई हैं जो दिनांक 08-10-2010 को खोली जाएंगी।

दिमापुर से जुब्जा (कोहिमा) तक (88 कि.मी.) नई लाइन:

जमीन पर संरेखण की स्टेकिंग सहित दिमापुर से कोहिमा (123 कि.मी.) तक संपूर्ण सेक्शन के लिए एफ एल एस पूरा किया जा चुका है। भू-तकनीकी जाँच प्रगति पर है।

अगरतला से सबरूम तक नई मीजी लाइन (110 कि.मी.)

फाइनल लोकेशन सर्वेक्षण का कार्य तथा अगरतला से सबरूम तक सम्पूर्ण सेक्शन के लिए भूमि पर संरेखण की स्टेकिंग का कार्य पूरा किया गया। भू-तकनीकी जाँच पूरी कर ली गई है। दिनांक 29.07.09 को रेलवे बोर्ड ने अगरतला से उदयपुर तक 44 कि. मी. के लिए कुल 336.17 करोड़ रूपये का आंशिक विस्तृत प्राक्कलन स्वीकृत कर दिया है । उदयपुर से सबरूम तक कुल 1094.69 करोड़ रूपये का पार्ट II विस्तृत प्राक्कलन स्वीकृति हेतु दिनांक 30.4.10 को रेलवे बोर्ड भेजा। बाद में रेलवे बोर्ड की टिप्पणियों के अनुपालन में इसकी समीक्षा की गई एवं इसे परिवर्तित करते हुए 786.71 करोड़ रूपए का विस्तृत प्राक्कलन दिनांक 27.07.2010 को पुन: रेलवे बोर्ड को प्रस्तुत किया गया।

भैरवी से सैरंग (51.38 कि.मी.) तक नई बड़ी लाइन :

भैरवी-सैरंग (51.38 कि.मी.) नई बीजी लाइन हेतु फाइनल लोकेशन सर्वे पूरा किया जा चुका है एवं कुल 2429.41 करोड़ रूपए का विस्तृत प्राक्कलन दिनांक 02-07-10 को स्वीकृति हेतु रेलवे बोर्ड भेजा गया।

सेक्क से रंगपो तक नई बड़ी लाइन: (50.87 कि.मी.) :

रेलवे बोर्ड द्वारा अनुमोदित समझौता ज्ञापन पर इरकॉन के साथ दिनांक 7-5-10 को हस्ताक्षर किए गए । इरकॉन द्वारा दिनांक 16-07-10 को संरेखण अभिकल्प एवं भू-वैज्ञानिक मानचित्रण के लिए ठेका प्रदान किया जा चुका है। मेसर्स जियोडाटा, इटली कंसल्टेंट ने प्रारम्भण रिपोर्ट एवं संरेखण रिपोर्ट (स्तर-I) इरकॉन को सुपुर्द कर दी है। इरकॉन द्वारा दिनांक 14-07-2010 को सुरंग संख्या 1 के लिए भू-भौतिकी अनुसंधान हेतु ठेका दे दिया गया है और मानसून के बाद कार्य 10 सितंबर, 2010 से प्रारम्भ हो गया है। शुरूआती 5 कि.मी. के लिए सर्वेक्षण एवं भू-अधिग्रहण हेतु वन विभाग से अनापत्ति हेतु आवेदन पत्र दे दिया है।

बरनीहाट से शिलांग तक नई बीजी लाइन (108.4 कि.मी.):

यह नया कार्य 4083.02 करोड़ रूपए की अनुमानित लागत तथा वर्ष 2010-11 के लिए 20.00 करोड़ रूपए के परिव्यय के साथ 2010-11 के रेल बजट में सम्मिलित किया गया है। मेघालय सरकार ने सिद्धांततः प्रस्तावित संरेखण का अनुमोदन कर दिया है। निर्माण पूर्व क्रियाकलापों के लिए आंशिक विस्तृत प्राक्कलन स्वीकृत किया गया। दिनांक 18-05-10 को फाइनल लोकेशन सर्वे के लिए ठेका प्रदान किया गया एवं भू-तकनीकी अनुसंधान हेतु निविदा कार्य को अंतिम रूप दिया गया। एफ एल एस कार्य प्रगति पर है। 19 कि.मी. का स्थलाकृति सर्वेक्षण पूरा किया गया।

लमडिंग-सिलचर-जिरिबाम, बदरपुर से बराईग्राम एवं बराईग्राम-कुमारघाट का आमान परिवर्तन (367.79 कि.मी.) :

कुल 677.83 लाख क्यूबिक मीटर में से 641.41 लाख क्यूबिक मीटर भू-कार्य, 377.56 कि.मी. में से 318.14 कि.मी. फार्मेशन, 10,650 मीटर में से 5386.60 मीटर सुरंग, 1217 मीटर में से 586.0 मीटर कट एंड कवर, 95 बड़े पुलों में से 74 की उप संरचना और 130 बड़े पुलों में से 51 की अधिसंरचना, 652 में से 597 छोटे पुलों, 9.07 लाख क्यूबिक मीटर में से 5.445 लाख क्यूबिक मीटर गिट्टी आपूर्ति, 378.56 कि.मी. में से 72.03 कि.मी. ट्रैक लिंकिंग एवं कुल 509.81 हेक्टेयर में से 500.39 हेक्टेयर भूमि अधिग्रहण इस परियोजना की संचयी प्रगति रही।

लिंक फिगर्स सहित रंगिया-मुकौंगसेलेक आमान परिवर्तन (510.33 कि.मी.)

कुल 59.728 लाख क्यूबिक मीटर में से 30.265 लाख क्यूबिक मीटर भू-कार्य, 510.48 कि. मी. में से 185.10 कि. मी. फार्मेशन, 661 छोटे पुलों में से 237 छोटे पुल, 206 बड़े पुलों में से 70 की उप संरचना एवं 10 की अधिसंरचना, कुल 60 हेक्टेयर में से 13.83 हेक्टेयर भूमि अधिग्रहण और 14.09 लाख क्यूबिक मीटर में से 1.693 लाख क्यूबिक मीटर गिट्टी आपूर्ति की संचयी प्रगति रही।

वित्तीय निष्पादन 2010-2011

2010-2011 का परिव्यय

- रेलवे बजट = 873.24 करोड़ रूपये
- अतिरिक्त बजटीय सहायता (प्रथम 6 माह के लिए) = 385.89 करोड़ रूपये
- निक्षेप कार्य (रक्षा मंत्रालय) = 0.62 करोड़ रूपये

कुल = 1259.75 करोड़ रूपये

खर्च 2010-2011

- अगस्त,10 के दौरान खर्च (लगभग) = 71.40 करोड़ रूपये + 0.00 करोड़ रूपये (निक्षेप कार्य)

कुल = 71.40 करोड़ रूपये

- अगस्त,10 तक संचयी खर्च (लगभग)= 427.45 करोड़ रूपये + 0.58 करोड़ रूपये (निक्षेप कार्य)

कुल = 428.03 करोड़ रूपये

- परिव्यय का खर्च (%) = 33.98 %

वर्ष 2010-2011 में लक्ष्य निर्धारित परियोजनाओं की स्थिति

परियोजना	प्रगति	लक्ष्य
फकीरागाम से खुकड़ी 66 कि.मी.(आमान परिवर्तन)	100 %	कार्य पूरा हुआ
मालदा टाउन-ओल्ड मालदा टाउन (0.4 कि.मी.) दोहरीकरण	100 %	कार्य पूरा हुआ
न्यू गुवाहाटी-डिगारू (29.814 कि.मी.) दोहरीकरण	85.10 %	दिसम्बर, 2010

सिगनल एवं दूरसंचार निर्माण कार्य

कार्य	प्रगति	लक्ष्य
न्यू जलपाईगुड़ी-बंगाईगांव-गुवाहाटी : मोबाइल ट्रेन रेडियो कम्युनिकेशन	गुवाहाटी-न्यू बंगाईगांव-न्यू जलपाईगुड़ी-मालदा टाउन-कटिहार सेक्शन में एम.टी.आर.सी. प्रणाली का संचालन 10 जनवरी, 2010 से चालू किया गया।	कार्य पूरा करके तिनसुकिया मंडल को सौंपा गया।
न्यूजलपाईगुड़ी-बारसोई-मालदा टाउन व बारसोई-कटिहार मोबाइल ट्रेन रेडियो कम्युनिकेशन	कटिहार मंडल का 'वे साइड सिस्टम' दिनांक 28.05.10 को अनुरक्षण संगठन को सौंप दिया गया।	कार्य पूरा हुआ।
पानीतोला-डिब्रूगढ़ टाउन : स्टैन्डर्ड III पैनल इन्टरलाकिंग तथा एम.ए.सी.एल द्वारा सिगनलों का पुन:स्थापन (राजधानी मार्ग, 5 स्टेशन)।	डिब्रूगढ़ टाउन में पी.आई कार्य चालू करने के लिए तैयार है। सी.आर.एस. स्वीकृति प्राप्त कर ली गई है। तिनसुकिया मंडल से एन.आई. प्रोग्राम अपेक्षित है।	-

वर्कशॉप

कार्य	प्रगति	लक्ष्य
डिब्रूगढ़ वर्कशॉप- ए.सी. कोच के लिए पीरियाडिकल ओवरहालिंग शॉप	100%	जून, 2010 में कार्य पूरा हुआ।
डिब्रूगढ़ वर्कशॉप- पीरियाडिकल ओवरहालिंग क्षमता को 60 बी.जी. कोच प्रति माह करना	90%	फिनिशिंग कार्य प्रगति पर है।
किशनगंज- ट्रेन परीक्षण सुविधा का विकास	90%	निधि की अनुपलब्धता तथा साइट क्लियरेंस के कारण कार्य बंद है।
न्यू बंगाईगांव-वर्कशाप आरसीसी बाउंडरी वॉल	73%	2400 में से 2130 आरएम तक तथा 2.40 किमी पथ-वे में से 0.780 किमी पथ-वे कार्य पूरा हुआ.दिनांक 7.6.10 से कार्य बंद है।
सिलिगुड़ी जंक्शन डीज़ल लोकोशेड-100 लोकोमेटिव को रखने के लिए डीज़ल लोकोशेड का विस्तार	10%	सितम्बर,10
सिलिगुड़ी जंक्शन-डीज़ल बहुउद्देशीय यूनिट कारशेड के साथ रेल कार रख-रखाव की सुविधा	10%	अक्टूबर,10

चालू सर्वेक्षण

क्रम सं	सर्वेक्षण का नाम	स्वीकृति वर्ष	राज्य	प्रगति	पूरा करने की लक्ष्य तिथि
1.	दुल्लचेरा से चेराजी तक नई लाइन	2009-10	असम	100%	जून, 2010 में कार्य पूरा हुआ।
2.	न्यू जलपाईगुड़ी से न्यू अलीपुरद्वार तक दोहरीकरण	2010-11	पश्चिम बंगाल	100%	जून, 2010 में कार्य पूरा हुआ।
3.	हल्दीबाड़ी से चेंगराबंधा नई लाइन	2010-11	पश्चिम बंगाल	100%	जुलाई, 2010 में कार्य पूरा हुआ।
4.	बरपेटा रोड से टिहु तक वाया बरपेटा आर इ टी सर्वे	2010-11	असम	100%	2.9.10 को बोर्ड को रिपोर्ट भेजी गई।
5.	नॉर्थ लखीमपुर से सिलापथार नई लाइन	2010-11	असम	15%	फरवरी, 2011
6.	जोगीघोपा से बरपेटा, खत्थेबाड़ी, हाजो तथा खुबालकुसी होकर गुवाहाटी तक नई लाइन	2010-11	असम	10%	फरवरी, 2011

हिंदी दिवस संदेश

प्रिय साथियो,

आज हिंदी दिवस है। आपको और आपके परिजनों को हिंदी दिवस के अवसर पर मेरी शुभकामनाएँ।

आप सब जानते हैं कि हर वर्ष 14 सितंबर हिंदी-दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन 1949 में संविधान सभा ने हिंदी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। तद्नुसार भारत के संविधान में अध्याय 17 को संघ की राजभाषा के रूप में सम्मिलित किया गया और अनुच्छेद 343 से 351 में इसका वर्णन किया गया है।

हमारे देश के संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार हिंदी भारत संघ की राजभाषा है और इसकी लिपि देवनागरी है। अत: हिंदी में सरकारी काम करना हम सब का संवैधानिक एवं नैतिक दायित्व है जिसे हम सभी को अपने-अपने स्तर पर निष्ठापूर्वक पूरा करना है। हमारे निर्माण संगठन में अन्य कार्यों के साथ-साथ हिंदी ने राजभाषा के रूप में निरंतर प्रगति की है और राजभाषा नीति के कार्यान्वयन से संबंधित सभी प्रावधानों के अनुसार सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बराबर किया जा रहा है। इस मुहिम को हमें आगे भी जारी रखना है।

सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में हिंदी कामकाज में भी कंप्यूटरों का उपयोग बराबर किया जा रहा है। राजभाषा की जिन मदों में हमारी प्रगति वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्य से कम है, उन पर हमें विशेष ध्यान देना है। इनमें हिंदी भाषा, हिंदी टाइपिंग तथा हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण प्रमुख है। इनके अलावा मूल पत्राचार में भी हिंदी का प्रयोग बढ़ाने की जरूरत है। सभी प्रकार के छोटे-छोटे सामान्य पत्र हिंदी में जारी कराए जाएं और इनके टेम्पलेट बनाकर हिंदी में पत्राचार की मात्रा बढ़ाई जाए। निर्माण संगठन ने गत वर्षों में कई उल्लेखनीय कार्य किए हैं जिनमें त्रैमासिक हिंदी पत्रिका "संवाद-पत्र" का प्रकाशन, निर्माण संगठन की एस ओ पी का हिंदी प्रकाशन, वेबसाइट का द्विभाषीकरण आदि प्रमुख हैं।

निर्माण संगठन के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से मेरा अनुरोध है कि सद्भावना, प्रेरणा और प्रोत्साहन से हिंदी दिवस की सार्थकता को बनाए रखने के लिए अपने-अपने स्तर पर हिंदी का इस्तेमाल बढ़ाने का संकल्प लें और अपने सभी सरकारी कार्यों में यथासंभव हिंदी का प्रयोग करें।

जय हिंद !

के चन्द्रा

14 सितंबर, 2010

(केशव चन्द्रा)
महाप्रबंधक/निर्माण
पूर्वोत्तर सीमा रेल, मालीगांव

सिलचर फील्ड यूनिट में राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन

निर्माण संगठन की सिलचर स्थित सभी फील्ड यूनिटों के लिए दिनांक 24.08.2010 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति गठित का गई और उसी दिन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की पहली बैठक श्री सुखवीर सिंह, उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण/जिरिबाम (सिलचर) की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में सिलचर स्थित निर्माण संगठन के कार्यालयों के अधिकारियों ने सदस्यों के रूप में भाग लिया। निर्माण संगठन के प्रतिनिधि के रूप में श्री जगन्नाथ, उप महाप्रबंधक/राजभाषा/निर्माण ने बैठक में भाग लिया और राजभाषा नीति पर विस्तृत चर्चा की। इसके अलावा इन कार्यालयों में हिंदी में हो रहे कामकाज और हिंदी भाषा प्रशिक्षण की समीक्षा भी की गई।

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

निर्माण संगठन के लिपिकवर्गीय कर्मचारियों के लिए दिनांक 06.09.2010 से 13.09.2010 तक 5 दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में राजभाषा नीति, राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियमों, वार्षिक कार्यक्रम तथा राजभाषा संबंधी प्रोत्साहन/पुरस्कार योजनाओं की जानकारी दी गई और कर्मचारियों को टिप्पण एवं प्रारूप लेखन तथा कार्यालयीन हिंदी व प्रशासनिक एवं रेल शब्दावली के बारे में भी संक्षिप्त जानकारी दी गई। कार्यशाला में उप महाप्रबंधक/राजभाषा/निर्माण, उप निदेशक/हिंदी शिक्षण योजना,मालीगांव, सहायक निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना, मालीगांव, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी/पू.सी. रेल, मालीगांव तथा राजभाषा अधिकारी/निर्माण ने व्याख्यान दिए। इस कार्यशाला में विभिन्न विभागों के कुल 17 कर्मचारियों ने भाग लिया।

प्रेरणात्मक विचार

- फूलों की खुशबू केवल हवा की दिशा की ओर फैलती है। परन्तु व्यक्ति की अच्छाई सभी दिशाओं में फैलती है।
- मनुष्य जन्म से नहीं, कर्म से महान होता है।

संकलन:- श्री बकरीदन
भंडार नियंत्रक/नि एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी/नि

असम एंव असमिया समाज

असम की जनसंख्या मंगोलियन, इंडो-बरमिश , इंडो-ईरानियन तथा आर्यन मूल की जातियों का मिश्रण है। हरे-भरे ऊँचे पहाड़ों में मूलत: मंगोलियन जनजाति के लोग रहते हैं। असम में रहने वाले विभिन्न जनसमुदायों के अन्तर्मिश्रण (जिन्हें असम के अग्रज संतान के रूप में माना जाता है) को असमिया और इनकी मातृभाषा असामिश मानी जाती है ।

2001 के जनगणना के अनुसार असम की जनसंख्या 2 करोड़ 66 लाख है, जिसमें से तकरीबन 90 प्रतिशत व्यक्ति ग्रामीण हैं । राज्य की कुल जनसंख्या में से 82 लाख मुसलमान हैं । जनजातियों की जनसंख्या 12.4 प्रतिशत या 3,308570 है ।

असम राज्य में विभिन्न जाति-जनजातियों के लोग वास करते आए हैं। इन जनसमुदायों की परम्परा, संस्कृति तथा प्ररिधान व रहन-सहन अलग-अलग हैं। अधिकतर समुदायों की अपनी भाषा है। इन जनसमुदायों की सांस्कृतिक परंपराएँ और रीति-रिवाज अनोखे हैं जो लोगों को अचंभित कर देते हैं। बोड़ो, मिरी या मिसिंग, मिकिर या कारबी, राभा, कछारी, लालूंग या तिवा, डिमासा, देउरी जनजाति बड़ी मात्रा में असम में हैं। असम के अनुसूचित जनजातियों में साक्षरता दर 62.5 प्रतिशत है जो राष्ट्रीय औसत 47.1 प्रतिशत से काफी ज्यादा है। अत: यह कहा जा सकता है कि असम की जनजातियाँ शिक्षा के क्षेत्र में बहुत आगे हैं तथा इन जनजातियों में भूमिहीन और श्रमिक बहुत कम हैं।

इतिहासकारों के अनुसार बर्मा के ऊपरी ईरावती क्षेत्र में बसने वाले शान जाति के लोग 13वीं शताब्दी में पटकाई की पहाड़ियों को पार कर ब्रह्मपुत्र घाटी में आए। धीरे-धीरे इन्होंने ब्रह्मपुत्र घाटी पर अपना अधिपत्य जमाया और अहोम राज्य की स्थापना की। अहोम राजाओं ने अपने छ: सौ वर्ष के शासनकाल के दौरान अपनी सत्ता को मुगल साम्राज्य, भारत के मुसलमान हमलावर, ब्रिटिश तथा अन्य हमलावरों से बचाये रखा । मुगलों ने असम पर सत्रह बार आक्रमण किया । 1824 ई० में ब्रिटिश लोग असम में चाय बागानों में रोपक के रूप में प्रवेश किये । 1826 में यानदाबू संधि (Yandabu Treaty) के बाद ब्रिटिश ने असम को अपने कब्जे में ले लिया। इसके बाद से ही धीरे-धीरे अहोम राजवंश के विनाश का काल शुरू हो गया ।

ब्रिटिशों के अलावा विभिन्न प्रवासी जो भारत के विभिन्न राज्यों से असम में आए, वे अपने साथ अपनी सांस्कृतिक मान्यताएं , जाति-प्रथा तथा दहेज-प्रथा आदि भी साथ लाए। इन प्रवासियों ने असमिया सभ्यता को धीरे-धीरे अपना लिया, परन्तु कुछ अभी भी अपने तरीके को ही अपनाए हुए हैं ।

पूर्वोत्तर भारत की लोकभाषा के रूप में असमिया ही प्रमुख भाषा के रूप में मान्य है । विद्वानों ने असमिया साहित्य की उत्पत्ति द्वितीय शताब्दी अर्थात स्वर्ण युग से माना है । परन्तु साहित्यिक इतिहास के रिकार्ड में इसे 14वीं शताब्दी से पाया जाता है ।

पन्द्रहवीं शताब्दी में असम में एक धार्मिक और सामाजिक क्रांति आई, जिसके अग्रदूत महापुरुष शंकरदेव थे । असमिया समाज में कीर्तनघर या नामघर और सत्रा (Satras) आदि के प्रवर्तक भी श्रीमंत शंकरदेव थे । उन्होंने "एकचरण-नाम-धर्म" अर्थात् एक भगवान की पूजा का प्रचार किया । दो महत्वपूर्ण सांस्कृतिक एवं धार्मिक अनुष्ठान जो असम के सांस्कृतिक निर्माण में मुख्य भूमिका अदा करते हैं वे हैं - "सत्रा" (satras) (जो 400 वर्षो से भी ज्यादा पुराना है तथा लोगों के धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्परा से बाँधे हुए है) तथा दूसरा है "नामघर" (प्रार्थना घर)। अधिकांश असमिया हिन्दू वैष्णव धर्म को मानते हैं। वैष्णव धर्मावलंबी लोग मूर्ति पूजा में विश्वास नही करते हैं। वे भगवान विष्णु की महिमा का गुणगान, नामकीर्तन का पाठ करके करते हैं। प्राय: असम के हर कोने में एक नामघर पाया जाता है और ग्रामीण लोग अपने स्थानीय सदस्यता के आधार पर इन नामघरों में जाते हैं और नामकीर्तन करते हैं । एक ही गांव में भिन्न-भिन्न जाति, भेद तथा भाषा-भाषी लोग एकजुट होकर रहते हैं। यद्यपि जाति प्रथा यहां भी है परन्तु भारत के अन्य राज्यों की तरह यहां पर इसे इतनी प्रधानता नहीं दी गई है।

असम में अन्य धर्म जैसे बौद्ध धर्म, सिख, ईसाई, इस्लाम आदि के लोग भी रहते हैं । बंगला बोलने वाले हिन्दु और मुसलमान सम्प्रदाय के लोग, नेपाली एवं अन्य समूहों को यहां अल्प संख्यक (Minority) के रूप में मान्यता दी गई है । असम में अहोम साम्राज्य से लेकर ब्रिटिश शासन काल तक विभिन्न कारणों से बगदाद एवं पूर्वी बंगा (बांग्लादेश) आदि जगहों से इस्लाम धर्म के लोग भी असम में आकर असम के जातीय जीवन के साथ घुल-मिल गये । जिन्हें परवर्ती समय में असमिया-मुसलमान के रूप में जाना जाने लगा और वे असम राज्य के अभिन्न अंग बन गये । इस्लाम धर्म के साथ ही असमिया भाषा में अरबी और फारसी शब्द भी मिलते है। असम के मुसलमान पीर-फकीरों द्वारा रचित गीतों में भी अरबी-फारसी शब्द पाये जाते हैं ।

पौराणिक काल से ही असम के लोग परम्परागत रूप से कलाकार, मूर्तिकार, राजमिस्त्री, बुनकर, धागा कातने वाले, हथकरघे, कुम्हार, सुनार, हाथी दांत के कलाकार, लकड़ी, बाँस, बेंत आदि में निपुण रहे हैं। यहाँ की असमिया महिलाएँ हस्त शिल्प में काफी निपुण हैं । हर घर में एक हथकरघा रहना शान समझा जाता है । महिलाए असम सिल्क और कपास के कपड़ों पर मनमोहक कलाकृतियों को बुनने में माहिर हैं। ऐरी (Endi), मूगा (Muga) और पात (Silk) असम सिल्क से बने मुख्य आइटम हैं । गांधीजी ने कहा था कि- "असमिया हस्त शिल्पकार अपने सपनों को इन कपड़ों में उतारते हैं"।

गामोछा (Gamusa) असमिया लोगों का सांस्कृतिक प्रतीक है । साथ ही साथ, तामूल-पान (Areca-nut & betel leaf) धार्मिक अनुष्ठानों का एक अभिन्न अंग माना जाता है। हर धार्मिक अनुष्ठानों में पान-तामूल एक जरूरी सामग्री है तथा घर में अतिथि सत्कार का भी एक जरूरी अंग है । गामोछा, एक समकोणीय सफेद कपड़ा होता है जो हाथ से बुना जाता है जिसके तीन तरफ लाल रंग का किनारा होता है और चौथे तरफ लाल रंग के कुछ नमूने बुने होते हैं । जिसका प्रयोग असमिया समाज में विभिन्न रूप में किया जाता है। इसे बिहू पर्व के अवसर पर एवं विभिन्न समय में बिहूवान के रूप में भेंट किया जाता है ।

इसे तौलिया, कमरबंध एवं बिहू नर्तकों के सिर की पगड़ी के रूप में प्राय:प्रयोग किया जाता है ।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक मेलभाव का प्रतीक बिहू असमिया लोगों का मुख्य जातीय उत्सव है । यह वर्ष के तीन मौकों पर मनाया जाता है । रंगाली (बहाग) बिहू ,कंगाली (काति) बिहू, और भोगाली (माघ) बिहू। ये तीनों बिहू वर्ष के विभिन्न । ऋतुचक्र के अनुसार मनाए जाते हैं । असम के पहाड़ों और समतल में रहने वाले विभिन्न जातियों एवं जनजातियों के सांस्कृतिक समन्वय से बिहू-उत्सव का जन्म हुआ। बिहू के समय कौन हिन्दु, कौन मुसलमान इसका पहचान कर पाना मुश्किल होता है, हर जाति-जनजाति इसे हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। असम के जातीय जीवन में सबसे महत्वपूर्ण उत्सव है 'बहाग बिहू' । यह अप्रैल महीने में मनाया जाता है । माघ बिहू या भोगाली बिहू जनवरी माह में मनाया जाता है। भोगाली बिहू में कृषकों का घर अनाज से भरा हुआ होता है, इसलिए इसे भोग अर्थात खाने-पीने का बिहू माना जाता है । इस बिहू में कई प्रकार के 'पीठा' (जिसे बोरा चावल से बनाया जाता है) जैसे तिल पीठा, तेल पीठा, घीला पीठा, नारियल का लड्डू, टेकेली पीठा आदि हैं। ये पीठा चावल, तिल, गुड़, नारियल एवं चीनी आदि से बनाए जाते हैं। काति बिहू अश्विन माह के संक्रांति के दिन (अक्टूबर महीने में) मनाया जाता है । इस समय खाने-पीने की वस्तुओं की कमी रहती है। बिहू के दिन लोग खेतों में और तुलसी के पौधे के नीचे दीये जलाते हैं और प्रसाद चढ़ाते हैं और भगवान से प्रार्थना करते हैं कि उनके खेत की फसल अच्छी हो जिससे खुशहाली छा जाए ।

बिहू-नृत्य असमिया लोक संस्कृति की एक अमूल्य संपदा है। बिहू असम का एक जनप्रिय लोक नृत्य है । बिहू उत्सव के समय जवान लड़के-लडकियाँ बिहू नृत्य-गीत करते हैं । बिहू-गीत के माध्यम से लड़के-लडकियाँ अपने प्रेम का इजहार भी करते हैं। बिहू नृत्य में व्यवहार किए जाने वाले वाद्य यंत्र हैं - ढोल, पेपा, तका, गगणा और ताल। इसके अलावा असम में विभिन्न लोक नृत्य और शास्त्रीय-नृत्य हैं, जो असम के सत्रिय परम्परा को दर्शाते हैं। इसी प्रकार बरपेटा के भुरताल नृत्य, चाय-बागानों के झूमूर नृत्य, बोड़ो सम्प्रदय के बागरूमबा नृत्य, मिसिंग लोगों के गुमराग नृत्य, देवधानी नृत्य आदि उल्लेखनीय हैं ।

इस तरह असम प्रदेश अनेक जातियों,जनजातियों, धर्मों, भाषाओं, संस्कृतियों को अपने में समेटे हुए सिर्फ एक प्रदेश ही नहीं है, अपितु एक छोटा भारत-वर्ष है जो अनेकता में एकता का एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करता है।

गायत्री मिलि
राजभाषा सहायक ग्रेड- I/निर्माण

सेवानिवृत्ति समारोह

श्री शिव कुमार, महाप्रबंधक/निर्माण का सेवानिवृत्ति समारोह

पूर्वोत्तर सीमा रेल, निर्माण संगठन के कर्मठ, कर्त्तव्यनिष्ठ, सुभाषिक तथा सुहृदयी व्यक्तित्व के धनी श्री शिव कुमार, महाप्रबंधक/निर्माण का सेवानिवृत्ति विदाई समारोह दिनांक 30.7.2010 को कांफ्रेंस हाल में आयोजित किया गया। सायं के समय श्री शिव कुमार को संगठन के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सामूहिक रूप से भाव-भीनी विदाई दी। इस समारोह में विभिन्न विभागों के अधिकारियों ने उनके कार्यों का उल्लेख करते हुए अपने विशेष संस्मरण सुनाए। उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों ने उनकी कार्यशैली, व्यक्तित्व और कर्मठता की भूरि-भूरि सराहना की, जिनके मार्गदर्शन में निर्माण संगठन ने ऐतिहासिक उपलब्धियाँ प्राप्त की। इन उपलब्धियों को भविष्य में भी जारी रखने की वचनबद्धता को दोहराते हुए श्री शिव कुमार को उपस्थित लोगों ने सुखद एवं समृद्धिशाली सेवानिवृत्त जीवन की शुभकामनाएं दीं। इसके साथ-साथ अन्य सेवानिवृत्त हुए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी उनकी सेवानिवृत्ति के भुगतान संबंधी राशि का चेक एवं सेवानिवृत्ति पदक प्रदान किए गए।

पदस्थापन

1.श्री आर.के. बोरा,मंडल बिजली इंजीनियर/निर्माण/रंगिया पदोन्नति पर दिनांक 02.09.2010 को उप मुख्य बिजली इंजीनियर/निर्माण/2 मालीगांव के पद पर पदस्थापित हुए।

2.श्री अभिजीत मजुमदार,कार्य.इंजीनियर/निर्माण/अभिकल्प/मालीगांव पदोन्नति पर दिनांक 03.09.2010 को उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण/अभिकल्प-2 के पद पर पदस्थापित हुए।

स्थानांतरण

1.श्री गजेन्द्र कुमार, उप मुख्य बिजली इंजीनियर/निर्माण/2 मालीगांव का दिनांक 02.09.2010 को उप मुख्य बिजली इंजीनियर(समन्वय)/मुख्यालय के पद पर स्थानांतरण हुआ।

2.श्री टी. दैमारी, उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण/सामान्य का दिनांक 03.09.2010 को उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण /वर्क्स के पद पर स्थानांतरण हुआ।

3.श्री एस.पी. देशमुख, उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण/मालीगांव का दिनांक 03.09.2010 को उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण/सामान्य के पद पर स्थानांतरण हुआ।

4.श्री एन. ब्रह्मा, उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण/अभिकल्प-2 का दिनांक 03.09.2010 को उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण/मालीगांव के पद पर स्थानांतरण हुआ।

बधाई

अधिकारियों को जन्म दिवस पर हार्दिक बधाई

02 अक्टूबर, श्री राधे श्याम, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-1
02 अक्टूबर, श्री मदन किशोर पाण्डेय, उप मुख्य इंजीनियर/1/सिलचर
04 अक्टूबर, श्री एस.सी. रजक, मुख्य इंजीनियर/निर्माण/3
07 अक्टूबर, श्री रेनिया ऐटे, उप मुख्य इंजीनियर/नि/इंफाल
10 अक्टूबर, श्री हरि सिंह, उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण/लामर्डिंग/1
12 अक्टूबर, श्री वी.वी. चक्रवर्ती, वित्त सलाहकार एवं मुलेधि/निर्माण/2
16 अक्टूबर, श्री एस.पी. यादव, उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण/कटिहार
19 अक्टूबर, श्री के. सिंगसन, उ.भ. सि. एवं दू. संचार इंजी/नि/एन.जे.पी.
02 दिसम्बर, श्री टी. दैमारी, उप मुख्य इंजीनियर/नि/वर्क्स

अधिकारियों को विवाह वर्षगांठ पर हार्दिक बधाई

07 अक्टूबर, श्री हरि सिंह, उप मुख्य इंजीनियर/नि/लामर्डिंग/1
05 नवंबर, श्री महेंद्र सिंह, उप मुख्य इंजीनियर/नि/डिब्रूगढ़/2
05 नवंबर, श्री एस.के. बर्नवाल, उप मुख्य इंजीनियर/नि/सिलापथार-1
07 नवंबर, श्री रेनिया ऐटे, उप मुख्य इंजीनियर/नि/इंफाल
22 नवंबर, श्री एस.पी.यादव, उप मुख्य इंजीनियर/नि/कटिहार
22 दिसम्बर,श्री एस.पी. देशमुख, उप मुख्य इंजीनियर/नि/सामान्य